17

हमको कछु भय ना रे,...

(कविवर पण्डितश्री बुधजनजी)

हमको कछु भय ना रे, जान लियो संसार ॥टेक॥

जो निगोद में सो ही मुझमें, सो ही मोक्ष मंझार।
निश्चयभेद कछू भी नाहीं, भेद गिनै संसार ॥1॥

परवश ह्वैं आपा विसारि के, राग-द्वेष को धार।
जीवत मरत अनादि काल तैं, यौं ही हैं उरझार ॥2॥

जाकरि जैसे जाहि समय में, जे होता जा द्वार।
सो बनि है टरि है कछु नाहिं, करि लीनौ निरधार ॥3॥

अगनि जरावै[१] पानी बोवे[२], बिछुरत-मिलत अपार।
सो पुद्गल रूपी-मैं 'बुधजन' सबको जाननहार ॥4॥

१. जलाती; २. गलावे